International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 6, pp: 584-586 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

# मानव एवं भौतिक संसाधन : समावेशी शिक्षा के सन्दर्भ में डॉ सोमेश नारायण सिंह ( विभागाध्यक्ष,शिक्षा-संकाय,हंडियापी.जी. कॉलेज हंडिया प्रयागराज )

Date of Submission: 15-09-2020 Date of Acceptance: 26-09-2020

**समावेशीशिक्षा** यह बताती है कि विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र और एक दिव्यांग को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने चाहिए। इसमें एक सामान्य छात्र एक दिव्याग छात्र के साथ विद्यालय में अधिकतर समय बिताता है। पहले समावेशी शिक्षा की परिकल्पना सिर्फ विशेष छात्रों ( विशिष्ट बालक ) के लिए की गई थी लेकिन आधुनिक काल में शिक्षा को इस प्रकार से व्यवस्थित किया जा रहा है कि सभी प्रकार के छात्रो (सामान्य एवं विशिष्ट) को विस्तृत दृष्टिकोण के साथ एक साथ शिक्षा प्रदान किया जा सके|समावेशी शिक्षा की ऐतिहासिक जड़ें कनाडा और अमेरिका से जुड़ीं हैं। प्राचीन शिक्षा पद्धति की जगह नई शिक्षा नीति का प्रयोग आधुनिक समय में होने लगा है। समावेशी शिक्षा विशेष विद्यालय या कक्षा को स्वीकार नहीं करता।इसमे अशक्त बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग करना अब स्वीकार्य नहीं है। दिव्यांग बच्चों को भी सामान्य बच्चों की तरह ही शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है।

**समावेशी शिक्षा में चार प्रकियाएं होती है-1.मानकीकरण**- सामान्यीकरण वह प्रक्रिया है जो प्रतिभाशाली बालकों तथा युवकों को जहाँ तक संभव हो कार्य सीखने के लिए सामन्य सामाजिक वातावरण पैदा करें।

2. **संस्थारहित शिक्षा**-संस्थारहित शिक्षा ऎसी प्रक्रिया है जिसमे अधिक से अधिक प्रतिभाशाली बालकों तथा युवक छात्राओं की सीमाओं को समाप्त कर देती है जो आवासीय विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं एवं उन्हें जनसाधारण के मध्य शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान करते हैं।

**3.शिक्षा की मुख्य धारा**- शिक्षा की मुख्य धारा वह प्रक्रिया है जिनमे प्रतिभाशाली बालकों को समान्य बालकों के साथ दिन प्रतिदिन शिक्षा के माध्यम से आपस मे संबंध रखते हैं।

**4.समावेश**- समावेश वह प्रक्रिया है जो प्रतिभाशाली बालकों को प्रत्येक दशा में सामान्य शिक्षा कक्ष में उनकी शिक्षा के लिये लाती है बिना पृथक्करणके। पृथक्करण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज का विशिष्ट समुह अलग से पहचाना जाता है तथा धीरे धीरे सामाजिक तथा व्यक्तिगत दूरी उस समूह की तथा समाज की बढ़ती जाती है।

समावेशी शिक्षा इन चार प्रक्रियायो से होकर पूर्ण होती है और इन्हे पूरा करने के लिए जो भी एजेंसिया उपलब्ध है उनके पास पर्याप्तमात्रा में मानव एवं भौतिक संसाधन उपलब्ध होने आवश्यक है इनकी अनुपलब्धता की स्थिति में समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करना कठिन है|

**मानव संसाधन** - संगठनात्मक स्तर पर, एक सफल मानव संसाधन विकास कार्यक्रम व्यक्ति विशेष को काम के एक उच्च स्तर पर ले जाने के लिए तैयार करना है , मानव संसाधन विकास एक ढाँचे के रूप में पहले चरण में संगठनों की दक्षता, प्रशिक्षण तथा उसके बाद संगठनों की लम्बी अवधि की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा के माध्यम से कर्मचारी, उसके व्यवसायिक लक्ष्यों का विकास, कर्मचारी के अपने वर्तमान तथा भविष्य के नियोक्ताओं के प्रति मूल्यों पर ध्यान केन्द्रित करता है। मानव संसाधन विकास को सामान्य रूप से किसी भी व्यवसाय के सबसे महत्वपूर्ण भाग को विकसित करने

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 6, pp: 584-586 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ।समावेशी शिक्षा के अर्थ में मानव संसाधन के रूप में सभी व्यक्ति आते है जो किसी भी प्रकर से इस व्यवस्था में सहयोग करते है जैसे – प्रशिक्षित शिक्षक ,प्राचार्य, समस्त टीचिंग और नॉनटचिंग स्टाफ, शिक्षा व्यवस्था से जुड़े सभी व्यक्ति |समावेशी शिक्षा के लिए आवश्यक है की मानव संसाधन का उचित प्रबंध हो क्योकि इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि पर्याप्त और प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक से ही छात्रो को शिक्षण प्रदान किया जाय | सामान्य कक्षा के शिक्षक सामान्य बालको के शिक्षण केलिए प्रशिक्षित किये जाते है और उस प्रकार की शिक्षा और वातावरण के अभ्यस्थ होते है इसी प्रकार से विशिष्ट बालको के शिक्षक विशिष्ट परिस्थितियों के अभ्यस्थ होते है लेकिन समावेशी शिक्षा के लिए आवश्यक है की शिक्षक उस परिस्थिति के अनुकूल व्यवहार करे | हालांकि मानव संसाधन, कृषि शुरू होने के पहले दिन से ही व्यवसाय तथा संगठनों का हिस्सा रहा है, सन् 1900 के प्रारंभ से ही उत्पादन की क्षमता बढ़ाने के तरीकों की और ध्यान देने से मानव संसाधन की आधुनिक अवधारणा शुरू हुई। 1920 तक अमेरिका में मनोवैज्ञानिकों और रोजगार विशेषज्ञों द्वारा मानव सम्बन्धो पर आधारित आंदोलन किया, जिन्होनें कर्मचारियों को बदले जाने वाले पुर्जों के बजाए उनके मनोविज्ञान तथा कंपनी के साथ सामंजस्य की कसौटियों पर परखा. इस आंदोलन में 20 वीं शताब्दी के मध्य में वृद्धि हुई, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया कि नेत्रित्व, एकता तथा निष्ठा का एक संगठनात्मक सफलता में महत्वपूर्ण योगदान होता है। यद्यपि इस दृष्टिकोण को 1960 के दशक और उसके बाद में अत्यधिक कठोर तथा कम नम्र प्रबंधन तकनीकों द्वारा ज़ोरदार चुनौती दी गयी, तथापि मानव संसाधन विकास को संगठनों, एजेंसियों तथा राष्ट्रों में एक स्थाई भूमिका मिल गयी है जो केवल अनुशासन बनाये रखने के लिए ही नहीं है अपितु विकास नीति का केंद्र बिंदु भी है |

**भौतिक संसाधन–भौतिक** संसाधन से तातपर्य शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए जिन उपकरणों एवं वस्तुओं की आवश्यकता होती है वे सभी भौतिक संसाधन कहलाता है। शिक्षा और शिक्षण व्यवस्था में भौतिक संसाधन का काफी महत्व है क्यों कि इस व्यवस्था में कई प्रकार के बच्चे एक साथ शिक्षा ग्रहण करते है इसलिए सबके लिए सभी प्रकार के संसाधन आवश्यक हैं शिक्षण संस्थानों में निम्न प्रकार के संसाधन होने चाहिए- भूमि- शासन की मान्यता अनुसार हो, खेल मैदान हो, बागवानी,भवन- पर्याप्त कक्षा कक्ष प्रकाश एवं हवायुक्त, प्राचार्य/प्रधानाचार्य कक्ष/ कार्यालय, सर्व सुविधायुक्त कम्प्यूटरीकृत/स्टाफ कक्ष/स्वागत कक्ष/ अतिथि कक्ष/ अन्नपूर्णा कक्ष।, प्रयोगशालाऐं ( संकाय के अनुसार) ( पी.सी.बी.), गणित प्रयोगशाला,भाषा प्रयोगशाला, पुस्तकालय एवं वाचनालय स्तर और व्यवस्थानुसार हो - स्वतंत्र कक्ष, ई-लाइब्रेरीरखरखाव की कम्प्यूटरीकृत व्यवस्था हो- कक्षा कक्ष-चलित पुस्तकालय, स्मार्ट क्लास, कम्प्यूटर लैब-इंटरनेट युक्त/ प्रोजेक्टर युक्त/ वाईफाई, कम्प्यूटर की प्रयोगशाला।, संगीत कक्ष + खेलकूद कक्ष + गतिविधि कक्ष + बड़ा सभागार,प्रसाधन - स्वतंत्र प्रसाधन, समुचित सफाई।, पेयजल, पानी का स्त्रोत - वाटरफ्यूरीफायर, पेयजल टंकी की सफाई 8 दिन में। सुविधा और क्षमता के अनुसार वाटर कूलर लगे हो।, फर्नीचर - इकाई के अनुसार एवं आयु वर्ग के अनुसार (शिशुवाटिका/प्राथमिक/ माध्यमिक/उच्चतर) एवं सभी अन्य कक्षों में आवश्यकता ओर उपयोगिता अनुसार फर्नीचर हो।, विद्युत व्यवस्था + एल.ई.डी. लगी हो, पर्याप्त पंखे।, बोर्ड- ग्रीन बोर्ड, सफेद बोर्ड, सेरेमिक बोर्ड कक्षा में यथा स्थान लगे हो , भवन में गतिविधि बोर्ड, डिस्प्ले बोर्ड ( बच्चों की उपलब्धियां दर्शाने वाली) ,शिकायत एवं सुझाव पेटी यथोचित स्थान पर।, इन्वेर्टर एवं जनरेटर आवश्यकता/क्षमता अनुसार।, ध्वनि विस्तारक यंत्र का सेट-अप- संपूर्ण भवन में सूचना सम्प्रेषण की उचित व्यवस्था।इकाईशः घोष एवं घोष सामग्री, पृथक से शिशुवाटिका जिससे 12 आयाम और गतिविधि पर आधारित संसाधन। तरणताल आदि।, आवश्यकता के अनुसार - वाहन व्यवस्था एवं रखरखाव हेतु स्टेण्ड,सी.सी.टी.व्हीं. कैमरे,भवन का रखरखाव, पुताई एवं मैन्टीनेन्स समय-समय पर,कार्यक्रम हेतु मंच,सामग्री सुधार हेतु रखरखाव में Toll-Box हो, सभी केलिए First -Aid Box इकाईशः या चिकित्सा कक्ष

हो,स्वच्छता दृष्टि से डस्टबिन, जैविक + रासायनिक अलग-अलग कचरा प्रबंधन की व्यवस्था उपयुक्त हो,सुरक्षा हेतु अग्नि शमन यंत्र,खेल हेतु इनडोर$ आउटडोर खेल आवश्यक रूप से हो।

1. ↑ *मानव संसाधन को विकसित करने में अग्रणी* Vol 6 (# 3) अगस्त 2004 और Vol 8, # 3, 2006
2. ↑ "*संग्रहीत प्रति*." *मूल से* 20 *अप्रैल* 2009 *को पुरालेखित*. *अभिगमन तिथि* 4 *नवंबर* 2009.
3. ↑ "*संग्रहीत प्रति*." *मूल से* 11 *अप्रैल* 2010 *को पुरालेखित*. *अभिगमन तिथि* 4 *नवंबर* 2009.
4. केलीडी, 2 मानव संसाधन विकास की दोहरी धारणाएं : नीति के मुद्दे: SME, अन्य क्षेत्र और मानव संसाधन विकास की विवादित परिभाषाएं, http://ro.uow.edu.au/artspapers/26 Archived 14 अक्टूबर2009 at the वेबैक मशीन.
5. नेडलरL ED., 1984, मानव संसाधनों के विकास की पुस्तिका, जॉनविले और संस, न्यूयार्क.
6. मैक्लीन, G.N., उस्मान-गनी, A.M., & Cho, (Eds.).राष्ट्रीय नीति के रूप में मानव संसाधन विकास. मानव संसाधन के विकास में अग्रणी, अगस्त (2004) 6(3)
7. एलवुडएफहोल्टों द्वितीय, जेम्सडब्ल्यूट्रोटजूनियर, 1996, एक व्यावसायिक शिक्षा और मानव संसाधन विकास की और बढ़ता रुझान, व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा पत्रिका Vol 12, No. 2, नहीं, p7
8. ↑ "*संग्रहीत प्रति*." *मूल से* 7 *जनवरी* 2009 *को पुरालेखित*. *अभिगमन तिथि* 4 *नवंबर* 2009.

डॉसोमेशनारायणसिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा-संकाय,
हंडियापी. जी. कॉलेजहंडियाप्रयागराज